29. दुभाषिए की भूमिका और रोजगार 171
– मनीष सोलंकी

30. सूचना एवं दूरसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व 17[illegible]
– निलेश एस. पाटील

31. डबिंग और सबटाईटलिंग की प्रक्रिया में अनुवाद 1[illegible]
– डॉ. हरि राम

32. मराठी से हिंदी अनुवाद की समस्याएँ
– माधुरी राजीव क्षीरसागर

33. विश्व हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद का योगदान
– एन. गणपति राव

Mrs Madhuri Rajeev. Kshirsagar
Asst. prof. Hindi Department
ISBN. Publication
Book - ch.

अकॅडेमिक
बुक पब्लिकेशन्स

अनुवाद विज्ञान : विविध आयाम
© डॉ. पोपट भावराव बिरारी

• प्रकाशक •
अकॅडेमिक बुक पब्लिकेशन्स
'ज्ञानदीप', फ्लॅट नं. 3, चैतन्य नगर, प्रगती स्कूल के सामने, जलगाँव 425001

• प्रमुख वितरक •
प्रशांत बुक हाउस
3, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालय के पास, जलगाँव 425001
दूरध्वनी : 0257-2235520, 2232800 मो. 9421636460

• टाईपसेटींग •
अकॅडेमिक बुक पब्लिकेशन्स, जलगाँव

संस्करण : प्रथम, जुलाई 2022
~~आयएसबीएन : 978-93-93222-03-0~~
मूल्य : ₹ 325/-
ISBN 978-93-92425-00-0

e-Book s are available online at kopykitab.com

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के तहत इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री कोई भी व्यक्ति/संस्था/समूह आदि इस पुस्तक की आंशिक या पूरी सामग्री किसी भी रूप में बिना अनुमति के मुद्रित/प्रकाशित/फोटो कॉपी नहीं कर सकता। इस का उल्लंघन करनेवाले कानूनी तौर पर हानि के उत्तरदायी होंगे।

प्राक्कथन

अनुवाद का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत एवं बहुआयामी है। संसार की हजारों भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सर्जनात्मक तथा कार्यात्मक सामंजस्य स्थापित रखने हेतु अनुवाद एक सशक्त एवं कारगर माध्यम है। अनुवाद की वर्तमान सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज अनुवाद की उपादेयता को देखते हुए विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रमों में अनुवाद विषय को पढ़ाया जा रहा है ताकि छात्रों में अनुवाद कला का कौशल विकसित हो सके। अतः इस दृष्टि से 'अनुवाद विज्ञान : विविध आयाम' यह ग्रंथ उपादेय सिद्ध होगा।

भूमंडलीकरण के इस दौर में मानव का वैश्विक भाषाओं से संपर्क बढ़ रहा है। ऐसे में बहुभाषा की स्थिति निर्माण होना स्वाभाविक है। व्यक्ति को संसार की सभी भाषाएँ नहीं आती। इसलिए उन भाषाओं के भाव या विचारों का अर्थबोध कराने में व्यक्ति को कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में वहाँ अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता होती है। अनुवाद का संबंध विभिन्न क्षेत्रों से है। साहित्य, संचार, बातचीत, अंतरराष्ट्रीय संबंध, पत्राचार, न्यायालय, कार्यालय, शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि विविध क्षेत्रों में अनुवाद कार्य तेजी से हो रहा है।

किसी भी देश की वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास में अनुवाद का विशेष योगदान रहा है। राष्ट्रीय एकता से लेकर अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सामाजिक सूत्रों का नियमन अनुवाद से सफल हो पाता है। वर्तमान में ज्ञान-विज्ञान के विविध आयामों में विश्व की उन्नति एवं उपलब्धियों की अद्यतन जानकारी हेतु मानव अनुवाद का प्रयोग कर रहा है। हिंदी भाषा विश्व की भाषाओं में पूर्णतः वैज्ञानिक भाषा है। भारत में प्रशासनिक कामकाज हेतु हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया किंतु हिंदीतर-भाषी लोगों की भाषाविषयक कठिनाई देखते हुए कुछ वर्षों के लिए अंग्रेजी का भी साथ में प्रयोग होने के प्रावधानों से प्रशासनिक अनुवाद कार्य में वृद्धि हुई है। कंप्यूटर संलग्न अनुवाद कार्य हेतु विविध सॉफ्टवेयरों का विकास भी हुआ है। आज अनुवाद के कारण कई बॉलीवुड, हॉलीवुड फिल्में हिंदी में डब हो रही हैं। बहुभाषाविद अनुवादक के लिए विभिन्न रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। सरकारी तथा गैर-सरकारी विविध क्षेत्रों में अनुवादक, अनुवाद अधिकारी, राजभाषा अधिकारी आदि पदों पर नौकरियाँ प्राप्त हो रही है। इसके अलावा मीडिया अनुवादक एवं दुभाषिए के लिए भी रोजगार के द्वार खुल गए हैं।

32

मराठी से हिंदी अनुवाद की समस्याएं

– माधुरी राजीव क्षीरसागर

अनुवाद के लिए दो भाषाओं का ज्ञान होना एवं दोनों भाषाओं पर अधिकार होना अनिवार्य होता है, तभी वह अपने अनुदित कार्य को न्याय देने में सक्षम बन पाता है। जब हम **मराठी** और **हिंदी** दो भाषाओं के परस्पर अनुवाद पर विचार करते हैं तब अनुवाद के समय आनेवाली कुछ समस्याओं को अनदेखा नहीं कर सकते। जैसे- मराठी में अनुवाद के लिए '**भाषांतर**' शब्द का प्रयोग होता है, जहां हिंदी में '**अनुवाद**' कहा जाता है। अनुवाद कार्य को सफल बनाने के लिए दोनों भाषाओं की प्रकृति में समानता होनी आवश्यक होती है।

'**भाषांतर**' या 'अनुवाद' प्रक्रिया एक ही होने के बाद भी इस प्रक्रिया को एक से दूसरी भाषा में अंजाम देने के लिए कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मूल लेखन के समान न्याय देना अनुवादक के लिए कसौटी का काम है। अतः यहाँ मराठी भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद करते समय आनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

मराठी से हिंदी अनुवाद की समस्याएं :-

इस अनुवाद प्रक्रिया में दोनों भाषाओं के लिंग, वचन, कारक, क्रिया, सर्वनाम, विशेषण, कहावतें और मुहावरों के प्रयोग की समस्या अनुवादक के सामने प्रस्तुत होती है। वह निम्नवत है -

1) लिंग भेद की समस्याएं :-

लोकरूढ़ि के अनुसार मराठी और हिंदी इन दो भाषाओं में लिंग से संबंधित अपने-अपने विशिष्ट प्रयोग होते हैं। मराठी में शब्दों के तीन लिंग होते है- स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, नपुंसक लिंग। किंतु हिंदी में नपुंसक लिंग नहीं है। मराठी के नपुंसक लिंग शब्द हिंदी में स्त्रीलिंग या पुल्लिंग होते हैं। जैसे-

मराठी में– शामला **चैन पडत** नव्हती. पोस्टात जाऊन त्याने आपल्या मुलाला **तार** केली.

इस वाक्य में **चैन, तार ये शब्द** मराठी में स्त्रीलिंग में होते है तो हिंदी में पुल्लिंग में दिखाई देते है। इसके अनुवाद में इस तरह की समस्या आती है-

हिंदी में– शाम को **चैन नहीं** पड़ रहा था। डाकघर में जाकर उसने अपने बेटे को '**तार**' भेज दिया।

इसी तरह इसके विपरीत मराठी में जो शब्द पुल्लिंग में है वे हिंदी में स्त्रीलिंग में मिलते है। जैसे-

मराठी में– रावणाचा मृत्यू झाला. त्याचा देह जमिनीवर पडला.

हिंदी में– रावण की मृत्यु हो गयी। उसकी देह जमीन पर पड़ी थी।

इन दो वाक्यों में **मृत्यु, देह** मराठी में पुल्लिंग और हिंदी में स्त्रीलिंग होते हैं।

2) वचन भेद की समस्याएं :-

निम्नलिखित उदाहरणों में हमें यहाँ कुछ शब्दों का अनुवाद हिंदी में बहुवचन के रूप में होना दिखाई देता है-

मराठी में– मी देवाचे दर्शन घेतले. आता मला गावी जाण्यासाठी **तुमची** सही हवी आहे.

हिंदी में– मैंने भगवान के दर्शन कर लिए। अब मुझे गाँव जाने के लिए **आपके** हस्ताक्षर चाहिए।

3) क्रिया भेद की समस्याएं :-

प्रायः हम देखते है कि मराठी भाषा की अपेक्षा हिंदी भाषा में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग अधिक मात्रा में होता है। इसकी जगह उठना, बैठना, कहलना, खाना, लेना, सोना, देना, आना, पाना, जाना आदि सहायक क्रियाओं का उपयोग किया जाता है। जैसे -

मराठी में– मी खातो, तो जातो. शाम निघाला.

हिंदी में– मैं खाता हूं, वह जाता है। शाम निकल पड़ा।

भाषा तब मुहावरेदार बनती है जब उस भाषा में क्रियाओं का लाक्षणिक प्रयोग होता है, लेकिन जब ऐसे लाक्षणिक प्रयोग रूढ़ बन जाते है तब उनका सामान्य प्रयोग होने लगता है। ऐसी क्रियाओं का अनुवाद शब्दशः नहीं किया जा सकता।

4) कारक भेद की समस्याएं :-

हिंदी में संज्ञा को लगनेवाले विभक्ति प्रत्यय संज्ञा से अलग लिखे जाते है किंतु सर्वनाम के साथ जोड़कर लिखे जाते है। मराठी में वह संज्ञा या सर्वनाम के साथ जोड़कर ही लिखे जाते हैं। जैसे-

मराठी में– शामाने तीचे काम केले.

हिंदी में– शामा ने उसका काम कर दिया।

मराठी से हिंदी में अनुवाद करते समय कई कारकों के प्रयोग एक विशिष्ट प्रकार से होते हैं। हिंदी कर्ता कारक का विभक्ति प्रत्यय '**ने**' है, जो मराठी में भी

उपयोग में लाया जाता है इसलिए हमें सावधानी से देखना एवं समझना होगा।

मराठी में– खांडेकरांनी लिहिलेल्या ययाती कादंबरीस ज्ञानपीठ **पारितोषिक** मिळाले.

यहाँ नी के स्थान पर ने विभक्ति नहीं आएगी। जैसे-

हिंदी में– खांडेकरजी के लिखे ययाती उपन्यास **को** ज्ञानपीठ **पुरस्कार** प्राप्त हो गया।

मराठी '**पाहिजे**' के लिए हिंदी में 'चाहिए' का प्रयोग होता है। किंतु इस क्रिया के कर्ता को मराठी में '**ने**' प्रत्यय लगता है तो हिंदी में '**को**' प्रत्यय की अपेक्षा होती है। जैसे-

मराठी में– प्रत्येक तरुणाने आधी कर्तव्य केला **पाहिजे**.

हिंदी में– हर एक युवक **को** पहले पढ़ाई करनी **चाहिए**।

शरीर का दोष दिखाने के लिए मराठी में 'ने' प्रत्यय का प्रयोग **होता** है और हिंदी में '**से**' प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे-

मराठी में– माझा काका एक **पायाने** लंगडा आहे।

हिंदी में– मेरा चाचा एक पाँव **से** लंगड़ा है।

शरीर के अवयवों का निकट संबंध बताने एवं रिश्ते नाते बताने **के** लिए हिंदी में '**के**' प्रत्यय का प्रयोग होता है जब की वचन कोई भी हो। जैसे-

मराठी में– सावजीला तीन मुली होत्या, त्याला दोन मुले होती.

हिंदी में– सावजी की तीन बेटियाँ थी। उसके दो बेटे थे।

मराठी 'ने' प्रत्यय के लिए हिंदी में प्राय: '**से**' प्रत्यय लगता है जो करण कारक का प्रत्यय है। किंतु '**से**' हिंदी में अपादान कारक का भी **प्रत्यय** है। अत: मराठी के 'ऊन', 'हून' के लिए भी '**से**' प्रत्यय का ही प्रयोग होता है। जैसे-

मराठी में– मी **वाघाला** घाबरतो, तरीपण मी त्याला भेटलो.

हिंदी में– मैं बाघ **से** डरता हूँ। फिर भी मैं उससे मिला।

'**से**' का अपादान अर्थ में प्रयोग–

मराठी में– **घरापासून** पाच किलोमीटर अंतरावर एक **झाड** होते, त्या झाडावरून एक फल खाली पडले.

हिंदी में– घर **से** पाँच किलोमीटर दूरी पर एक पेड़ था। **उस पेड़ से** एक फल नीचे गिर गया।

5) सर्वनाम की समस्याएँ :–

मराठी सर्वनाम के लिए हिंदी में '**तू**' और '**तुम**' दो सर्वनाम है। '**तू**' का हिंदी में प्रयोग बच्चे और बहुत निकट के व्यक्ति के लिए किया जाता है। कई बार

क्रोध में किसी का निरादर करने के लिए भी 'तू' का प्रयोग किया जाता है।

मराठी में '**तुम्ही**' **शब्द** का अनुवाद मराठी भाषी प्राय: '**तुम**' करता है जो समान है, किंतु हिंदी भाषी के लिए यह खटकनेवाली बात है। क्यों की मराठी में '**तुम्ही**' बहुवचन है तो हिंदी में '**तुम**' एकवचन है। हिंदी में '**आप**' इस आदरवाचक **सर्वनाम** का प्रयोग होता है। कभी-कभी मराठी '**आपण**' का इस रूप में प्रयोग होता है लेकिन '**आपण**' '**हम**' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे-

मराठी में– आपण **या**। आपण जाऊ।

हिंदी में– आप आइए। हम जाएंगे।

» हिंदी में 'आप' सर्वनाम **का** प्रयोग अन्य पुरुष में भी आदरार्थी होता है जो मराठी में प्राय: नहीं होता। जैसे-

मराठी में– कुसुमाग्रज मराठीचे थोर कवी होते, **त्यांनी** यशस्वी नाटके ही लिहिली.

हिंदी में– कुसुमाग्रज मराठी के महान कवि थे। **आपने** सफल नाटक भी लिखे।

» हिंदी में '**आप**' निजवाचक सर्वनाम के रूप में भी प्रयुक्त होता है। जैसे-

मराठी में– मी स्वत: येईन.

हिंदी में– **मैं** आप आ जाऊँगा।

» मराठी भाषी '**माझे**', '**आमचे**' जैसे सर्वनामिक विशेषण का अनुवाद '**मेरा**', '**हमारा**' करेगा लेकिन बहुत बार '**अपना**' का प्रयोग हिंदी के अनुकूल रहेगा। जैसे-

मराठी में– मी **माझे** काम करतो, तुम्ही **तुमचे** काम करा।

हिंदी में– मैं **अपना** काम करता हूँ, **आप अपना** काम कीजिए।

» मराठी के '**हा**', '**ही**', '**हे**' सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते है। कई बार इनका हिंदी में अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं होती। जैसे-

मराठी में– लोकमान्य टिलक **हे** भारतीय असंतोषाचे जनक होते।

हिंदी में– लोकमान्य तिलक **भारतीय** विद्रोह के जनक थे।

» **समुच्चय** बोधक '**की**' मराठी में दीर्घ है तो हिंदी में ह्रस्व अर्थात '**कि**' जैसे -

मराठी में– राम सीतेला म्हणाला **की**, मी बाहेर जातो.

हिंदी में– राम ने सीता से कहा **कि** मैं बाहर जाता हूँ।

» मराठी '**ही**' अव्यय के लिए हिंदी में '**भी**' का प्रयोग होता है और हिंदी '**ही**' मराठी के '**च**' के लिए आता है। जैसे-

मराठी में- भरत जवळच बसला होता। त्याने **ही** चित्र पाहिले

हिंदी में- भरत पास **ही** बैठा हुआ **था**। उसने **भी** चित्र देखा।

6) अन्य व्याकरणिक समस्याएँ :-

हिंदी में कुछ शब्दों के बहुवचन में '**से**' प्रत्यय का लोप होता है।

मराठी में- असा चमत्कार आम्ही **डोळ्यांनी** पाहिला नाही. **कानांनी** ऐकला नाही.

हिंदी में- ऐसा चमत्कार हमने न **आंखों देखा** न **कानों सुना**।

» क्रियार्थक संज्ञाओं के विशिष्ट प्रयोग में कारक योजना की ओर ध्यान देना आवश्यक होता है। जैसे-

मराठी में- रामचे वनवासात जाणे झाले. भरताचे भेटणे झाले.

हिंदी में- रामका वनवास जाना हुआ। भरत **का** मिलना हुआ।

» कुछ अव्ययों को उनके पहले आनेवाले शब्द में '**की**' प्रत्यय की अपेक्षा होती है। कुछ क्रियाओं को भी इसी प्रकार की अपेक्षा होती है। जैसे-

मराठी में- मी **घराकडे** निघालो. **तो शाळेकडे** जाऊ लागला.

हिंदी में- मैं घर **की तरफ** निकल पड़ा। वह पाठशाला **की ओर** जाने लगा।

» सम्बोधन के लिए मराठी में बहुवचन में '**नो**', '**हो**' जैसे प्रत्यय लगते है लेकिन हिंदी में सम्बोधन के सामान्य रूप को प्रत्यय नहीं लगता। उसके बहुवचन के रूप पर अनुस्वार नहीं होता। जैसे-

मराठी में- ए मुलांनो, सभ्य स्त्री-पुरुषहो माझे म्हणणे ऐका.

हिंदी में- ए लड़को, देवियो और सज्जनो मेरी बात सुनिए।

7) मुहावरों की समस्याएँ :-

मराठी '**वाक्प्रचार**' को हिंदी में '**मुहावरा**' कहा जाता है। **मुहावरा** यह मूलतः **अरबी** भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है **बोलचाल** तथा **बातचीत**। हिंदी में '**वाग्धारा**' शब्द का भी प्रयोग होता है किंतु **मुहावरा** शब्द अधिक प्रचलित है। मुहावरा पूर्ण वाक्य न होकर वाक्यांश होता है। मुहावरों का शब्दांशः अर्थ ग्रहण न करते हुए केवल उसका भाव ग्रहण किया जाता है जिसके कारण मुहावरों का अनुवाद करना कठिन होता है। मुहावरे लोकभाषा में प्रचलित होने से भाषा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन हमें होता है। मुहावरों का अनुवाद करते समय

कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है। अनुवाद करते समय जब समान मुहावरा उपलब्ध नहीं होता तब समानांतर मुहावरों का उपयोग करना चाहिए और अगर समांतर मुहावरा न मिले तो उस मुहावरे के अर्थ को स्पष्ट करना ठीक होता है। अगर समान मुहावरा न हो तो उसका शब्दानुवाद नहीं करना चाहिए अन्यथा उसका अर्थ सौंदर्य नष्ट होने की संभावना होती है। निम्न मुहावरों का सही प्रयोग किया गया है।

मराठी-हिंदी में समान मुहावरे

दगडावरची रेघ	-	पत्थर की लकीर
उजवा हात असणे	-	दाहिना हाथ होना
विडा उचलणे	-	बीड़ा उठाना
डोंगर कोसळणे	-	पहाड़ टूटना

मराठी-हिंदी में समानांतर मुहावरे

रक्ताचे पाणी करणे	-	खून पसीना एक करना
जिभेला हाड नसणे	-	जबान में लगाम न होना
आगीत तेल ओतणे	-	आग में घी डालना
अस्तनीतला निखारा	-	आस्तिन का साँप
जिवावर उदार होणे	-	जान हथेली पर लेना

8) कहावतों की समस्याएँ :-

मराठी भाषा '**म्हण**' शब्द के लिए हिंदी भाषा में '**कहावत**' शब्द का प्रयोग किया जाता है। '**म्हण**' और '**कहावत**' के सूत्र एक ही है। रूढ़ि और परंपरा से कुछ कथन भाषा के स्थायी अंग का बन जाते है। लोकसाहित्य का यह अंग सर्वमान्य हो जाने पर कहावत बन जाता है। कहावतें अपने आप में एक सार्थक वाक्य होता है जिसमें संक्षिप्त में बताया गया सत्य, अनुभव, विचार, उपदेश एवं सूचना का प्रभावशाली कथन होता है। कहावत लय और अलंकार से परिपूर्ण होती है। कहावत का अनुवाद लयपूर्ण बनाने में अर्थ और भाव को देखना जरूरी होता है। हर भाषा की कहावते भौगोलिक परिप्रेक्ष्य के अनुसार अलग-अलग होती है। कहावतों के अनुवाद में भाव को देखना महत्वपूर्ण होता है। निम्न कहावतों का सही प्रयोग होगा।

मराठी-हिंदी की समान कहवातें

आपला हात जगनाथ	-	अपना हाथ जगन्नाथ
करावे तसे भरावे	-	जैसी करनी वैसी भरनी
नाचता येईना आंगण वाकडे	-	नाच न जाने आँगन टेढ़ा

डोंगर पोखरून उंदीर काढणे - खोदा पहाड़ निकला चूहा

मराठी-हिंदी की समानांतर कहावतें

दुरून डोंगर साजरे - दूर के ढोल सुहावने

लहान तोंडी मोठा घास - छोटा मुँह बड़ी बात

वासरात लंगडी गाय शहाणी - अंधों में काना राजा

पिकते तिथे विकत नाही - घर की मुर्गी दाल बराबर

निष्कर्ष :-

हम इस निष्कर्ष पर आते है कि मराठी से हिंदी अनुवाद करने के लिए कुछ अभ्यास और कुछ कौशल से कार्य करना होगा जिससे अनुवाद की त्रुटियों पर नियंत्रण रखते हुए अनुवाद की मनोरंजक और भाषाशक्तिवर्धक प्रक्रिया में हम स्रोत और लक्ष्य भाषाओं की सूक्ष्म प्रकृति को जानेंगे तब न्यायपूर्वक अनुवाद कार्य को संपन्न कर सकते हैं। भाषाओं की भिन्न-भिन्न प्रकृतियों के कारण शतप्रतिशत अनुवाद होना संभव नहीं होता, लेकिन अनुवाद में मूल लेखन के अर्थ के निकट अर्थ देने का प्रयास किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1) अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएं - संपा. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

2) अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं - डॉ. भोलानाथ तिवारी

3) अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

33

विश्व हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद का योगदान

- एन. [illegible] राव

सृष्टि के निर्माण काल से ही भाषा का संबंध मानव समाज से रहा है। मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है, जिसके बिना मानव गूंगा है। इस विश्व में कई महाद्वीप, राष्ट्र, प्रांत है। कहा जाता है कि "चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर बानी।" यह कहावत आज भी चरितार्थ हो रही है। विदेशों से व्यापार करने के लिए संप्रेषण के लिए आवश्यकतानुसार भाषा अपनानी पड़ती है। उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री और उनके प्रचार के लिए अपनाए जानेवाले साधनों में स्थानीय भाषा का उपयोग होता है।

हिंदी सबसे सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ ही वह विश्व की संभवत: सबसे वैज्ञानिक भाषा है, जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहनेवाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है। यह विश्व में सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषाओं में से एक भाषा है, जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु है।

हिंदी भारत की राजभाषा है। विश्व भाषा बनने के सभी गुण हिंदी में विद्यमान है। बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय विकास तेजी से हो रहा है। हिंदी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने और विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों को संस्थागत व्यवस्था प्रदान करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की गई थी। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं में स्थान प्राप्त हुआ है। संयुक्त राष्ट्र ने साप्ताहिक हिंदी समाचार बुलेटिन आरंभ किया है।

अनुवाद सांस्कृतिक संबंधों से जुड़ने के कारण दिनोंदिन विश्व हिंदी भाषा का महत्व बढ़ रहा है। विश्व भाषाओं के बीच में सद्भाव और समझदारी के पुल बांधने का कार्य अनुवाद से ही संभव होता है। विश्व के समाजों और विभिन्न देशों के बीच की मैत्री को अनुवाद मजबूत बनाता है।

उत्तर-आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपयोगिता को विश्वभर में स्वीकार गया है। वैदिक युग के "पुन:कथन से लेकर आज के ट्रांसलेशन तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी और बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में 'स्वान्त: